

From the Desk of Editor

संपादकीय

अनुवाद: तकनीकी युग में ज्ञान-संतुलन का माध्यम

आज का युग अभूतपूर्व तकनीकी तीव्रता का युग है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव प्रौद्योगिकी, क्वांटम कंप्यूटिंग, अंतरिक्ष अनुसंधान और संचार-साधनों ने विश्व को एक ऐसे नेटवर्क में बाँध दिया है, जहाँ ज्ञान की गति प्रकाश से भी तीव्र प्रतीत होती है। किंतु इस गति के साथ-साथ एक गहरी असमानता भी पनपी है—तकनीकी संसाधनों के असंतुलित वितरण की, भाषाई व सांस्कृतिक अवरोधों की, और उस ज्ञान के प्रवाह में बाधा की जो मानवता को एक साझा चेतना की ओर ले जा सकता था। यही वह बिंदु है जहाँ अनुवाद मात्र भाषिक क्रिया नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक सेतु के रूप में उभरता है।

तकनीकी विकास का सबसे बड़ा विरोधाभास यह है कि उसका केंद्र कुछ ही देशों और भाषाओं तक सीमित है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के एल्गोरिद्म, चिकित्सा अनुसंधान या पर्यावरणीय डेटा प्रायः अंग्रेज़ी, चीनी या कुछ यूरोपीय भाषाओं में निर्मित और प्रसारित होते हैं।

परिणामस्वरूप ज्ञान का प्रवाह समान रूप से न होकर शक्ति-केन्द्रित हो जाता है। यह स्थिति न केवल वैश्विक असंतुलन को बढ़ाती है, बल्कि ज्ञान के लोकतंत्रीकरण की अवधारणा को भी चुनौती देती है। ऐसे में अनुवाद ही वह साधन है जो इस असमानता को कुछ हद तक पाट

सकता है—वह भाषाओं के बीच अर्थ, दृष्टि और अनुभव का वहनकर्ता बनकर ज्ञान को सार्वभौमिक बनाता है।

परंतु, अनुवाद की यह भूमिका सरल नहीं। तकनीकी शब्दावली, सांस्कृतिक सन्दर्भ, और वैज्ञानिक विमर्श की दार्शनिक बारीकियाँ अनुवादक के लिए नए संकट रचती हैं। उदाहरणतः कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रयुक्त “machine learning” या “neural network” जैसे शब्द केवल तकनीकी अर्थ नहीं रखते, वे मनुष्य की बुद्धि और आत्मचेतना की परिभाषा को भी चुनौती देते हैं। जब इनका अनुवाद हिंदी या किसी अन्य भारतीय भाषा में होता है, तो प्रश्न उठता है—क्या हम केवल शब्दों का रूपांतर कर रहे हैं या अर्थ का भी पुनर्निर्माण कर रहे हैं? इसीलिए अनुवाद अब केवल भाषा का नहीं, ज्ञान का पुनर्सृजन भी है।

ज्ञान का प्रवाह तभी संतुलित होगा जब उसकी पहुँच हर भाषिक समुदाय तक समान रूप से पहुँचे। भारत जैसे बहुभाषी समाज में यह और भी आवश्यक है कि आधुनिक तकनीकी साहित्य, वैज्ञानिक शोध और वैश्विक विमर्श स्थानीय भाषाओं में अनूदित हों। तभी नई शिक्षा नीति 2020 का वह स्वप्न साकार होगा जिसमें मातृभाषा के माध्यम से ज्ञान की स्वतंत्र अनुभूति का विचार निहित है।

अतः, आधुनिक तकनीकी युग में अनुवाद केवल संचार का उपकरण नहीं, बल्कि सभ्यता के संतुलन का आधार है। वह मानवता को याद दिलाता है कि ज्ञान यदि साझा न हो, तो तकनीक विकास नहीं—विभाजन का माध्यम बन जाती है। अनुवाद इस विभाजन को पाटने वाली वह अदृश्य शक्ति है जो भविष्य की विश्व-चेतना को एकात्मता की दिशा में अग्रसर कर सकती है।